प्राक्कथन

हिंदी साहित्य में पिछले पचास-साठ वर्षों से लेकर आज तक विभिन्न प्रकार के चरित्र, कालखण्ड और समस्याओं को लेकर प्रचुर मात्रा में शोध कार्य हुआ हैं। इक्कीसवीं सदी में स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, आदिवासी और जनजातीय- विमर्श आदि पर देश के कोने-कोने में विभिन्न संगोष्ठियाँ, चर्चासत्र, शोधकार्य और अनेक प्रकार के कार्यक्रम हो रहे हैं। इन सबके पश्चात मैंने अनुभव किया कि युग की मांग के अनुरुप विकलांगता पर भी विचार-विमर्श अथवा शोधकार्य होना अत्यावश्यक हैं। ताकि देश में ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व में विभिन्न प्रकार के विकलांग रहते हैं। वे भी समाज का महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। विकलांगों की संवेदना को शून्य कर देना एक प्रकार से मानवीयता के मान को मिटाना ही कहा जा सकता है। ऐसे चरित्रों को समझना, उनकी समस्याओं को समझना, संघर्ष को महसूस करना और संवेदना से समरस होना आज के युग में बहुत ही जरुरी है । लिंग अथवा जाति से रहित यह शोधकार्य मानवतावादी दृष्टि पर केन्द्रित होकर करने का मैंने प्रयास किया है। यह निर्विवाद सत्य है कि साहित्य ही किसी भी विषय को दिशा और महत्व प्रदान कर सकता है। ताकि साहित्य समाज का आईना होता है । इसलिए साहित्य का आधार लेकर साहित्य के माध्यम से यह शोध-प्रबंध समाज तथा नयी पीढ़ी के सामने रखने का यह मेरा छोटा-सा प्रयास है।

एम.फिल.के पश्चात् जब मन में शोध कार्य करने की इच्छा जागृत हुई तब इस इच्छा को सार्थकता में परिवर्तित करने के लिए अनुकुल विषय का होना अनिवार्य था। विषय चयन का सवाल मेरे सामने था। इसलिए विषय चयन को लेकर मेरे गुरुवर्य प्रो. डॉ. माधव सोनटक्के सर जी से बात की । मेरे गुरूवर्य जी ने तुरन्त इस विषय को अनुमती दर्शायी । मेरी रुचि के अनुसार कथा साहित्य में विकलांग चरित्रों को केंद्र में रखकर अध्ययन करना आरम्भ किया। अंतत: 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में

विकलांग चरित्र' यह विषय तय किया । हिंदी साहित्य में अछुता रहा हुआ यह विषय मन को प्रसन्न करता है । विभिन्न क्षेत्रों में अनेक विकलांगों ने अपनी विकलांगता पर मात कर कामयाबी हासील की हैं। विभिन्न क्षेत्रों में विकलांगों ने समाज की सेवा की हैं।

अध्ययन तथा विवेचन की सुविधा के लिए शोध-प्रबंध को छह अध्यायों में प्रस्तुत किया है ।

प्रथम अध्याय: 'विकलांग चरित्र और हिंदी कथा साहित्य' में प्राचीन काल से लेकर स्वतंत्रता तक के हिंदी कथा साहित्य में प्रस्तुत चरित्रों का विवेचन किया है। विकलांग शब्द का अर्थ बताकर अनेक परिभाषाएँ दी हैं । विकलांगों की समाज तथा परिवार में होनेवाली उपेक्षा को उजागर किया है। प्राचीन काल से लेकर स्वतंत्रता तक के विभिन्न क्षेत्रों में विकलांगों ने दिया हुआ योगदान स्पष्ट किया हैं । प्रेमचन्द पूर्व हिंदी कथा साहित्य से लेकर प्रेमचंदोत्तर हिंदी कथा साहित्य में प्रस्तुत विभिन्न प्रकार के विकलांग चरित्रों का संक्षेप में विवेचन किया हैं।

द्वितीय अध्याय: स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित विभिन्न प्रकार के विकलांगों की अनेक समस्याओं का विवेचन किया हैं । विकलांगों की शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और चिकित्सा सम्बन्धी समस्याओं को उजागर किया हैं । विकलांगों की विवाह विषयक समस्या, अवैध सम्बन्ध, यौन समस्या, कुण्ठा, पीड़ा, उपेक्षा, अपमान आदि का विवेचन किया हैं । विकलांगों की गरीबी, बेरोजगारी, बालमजूरी, भूखमरी आदि त्रासदी को स्पष्ट किया हैं ।

तृतीय अध्याय : 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में विकलांगों की समस्याएँ' में स्वतंत्रता के बाद हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित विकलांग चरित्रों की अनेक समस्याओं को उजागर किया हैं । उनकी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षिक, चिकित्सा, आरक्षण आदि समस्याओं का सूक्ष्म विवेचन किया हैं । साथ ही विकलांगों पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार, सामाजिक हिंसा, पारिवारिक हिंसा, बलात्कार जैसी अनेक समस्याओं को स्पष्ट किया हैं । विकलांगता के कारण विकलांगों की बदली हुई मानसिकता का विवेचन किया है।

चतुर्थ अध्याय : 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य में विकलांग चरित्र' में स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में चित्रित विकलांग चरित्रों के भेद स्पष्ट किये हैं। उनकी चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला हैं । जन्मजात, दुर्घटनाजन्य, रोगजन्य विकलांगता का विवेचन किया हैं । विक्षिप्तता, कुरुपता, अंधत्व, गूंगापन, बहरापन, पोलियो आदि विकलांगता के प्रकारों को स्पष्ट किया हैं । स्त्री, पुरुष, बालक, प्रौढ़, युवा, वृध्द आदि की विकलांगता और जीवन संघर्ष पर प्रकाश डाला हैं।

पंचम अध्याय : 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में विकलांग चरित्र' में स्वतंत्रता के बाद के उपन्यासों में चित्रित विभिन्न प्रकार के विकलांग चरित्रों को स्पष्ट किया हैं । शारीरिक अथवा मानसिक विकलांगता के कारण मन में उत्पन्न होनेवाली हीनता ग्रन्थि तथा कुण्ठा ग्रस्तता का सूक्ष्मता से विवेचन किया हैं । दुर्घटनाजन्य आयी हुई विकलांगता से बदली हुई मानसिकता को स्पष्ट किया है।

षष्ठ अध्याय : 'उपसंहार' में शोध प्रबंध के पाँच अध्यायों का मूल्यांकन किया है। शोध-निष्कर्षों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया हैं । परिशिष्ट में मूल ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, सन्दर्भ ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाओं, शब्द कोश आदि की सूची दी है।

कृतज्ञता ज्ञापन

'कोई भी पंछी केवल अपने ही परों के बल पर नहीं उड़ सकता'। यह विधान काफी अर्थगर्भित है। कोई भी मनुष्य हो या प्राणी, जो कुछ भी बनता है, जो कुछ भी होता है, उसके होने में या बनने में ज्ञात-अज्ञात रूप से सैंकडों व्याक्तियों का योगदान, सहयोग और प्रेरणा होती हैं। इसलिए ऐसे लोगों को भूलना नहीं चाहती। अखंड उनके ऋण में रहना चाहती हूँ। फिर भी औपचारिकता पर लक्ष्य केन्द्रित करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करने का प्रयास करुँगी।

मैं प्रथमत: प्रणाम करती हूँ मेरे शोध निर्देशक एवं पितातुल्य गुरुवर्य डॉ. माधव सोनटक्के सर (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग डॉ.बा.आं.म. विश्वविद्यालय औरंगाबाद) से आपने मेरी तमाम परिस्थितियों को समझकर, आत्मीयतापूर्वक न केवल धैर्य बँधाया, बल्कि मेरे शोध-अध्यायों का सूक्ष्म अध्ययन करके इसे बार-बार परिमार्जित किया। आपके बहुमूल्य मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से यह शोधकार्य सम्पन्न हुआ है । आपकी अर्धांगिनी और पुत्र मधुरेश को भी नहीं भूल सकती । उनका स्नेहभरा व्यवहार, घर गये बराबर प्रेमपूर्वक स्वागत मुझे अपनों की खुशी देता है । मैं आप और आपके परिवार के प्रति ऋणी हूँ ।

डॉ. बा.आं.म. विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के मेरे आदरणीय गुरुवर्य डॉ. नवले सर, डॉ. हणमंतराव पाटील सर, डॉ. भारती गोरे मॅडम, डॉ. सुधाकर शेंडगे सर, डॉ. संजय राठोड सर, डॉ. भगवान गव्हाडे सर, पूर्व प्रो. डॉ. अंबादास देशमुख सर, प्रो.नारायण शर्मा सर, प्रो.चंद्रदेव कवडे सर, डॉ. गणेशराज सोनाळे सर, डॉ. पद्मा पाटील मॅडम, अर्थशास्त्र विभाग के डॉ. पुरुषोत्तम देशमुख सर आदि विद्वतजनों का मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं सहयोग मिला और भविष्य में भी मिलता रहेगा। आप सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ । हिंदी विभाग के शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के प्रति भी आभारी हूँ ।

मेरे महाविद्यालय के पूर्व प्रधानाचार्य वामनराव सूर्यवंशी सर, डॉ.भालेराव सर तथा विद्यमान प्रधानाचार्य डॉ. नवनाथ लोखंडे सर, शिक्षक तथा शिक्षकेत्तर कर्मचारियों ने मुझे समय-समय पर मौलिक सहयोग दिया आप सभी के प्रति आभारी हूँ ।

हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सुभाष क्षीरसागर सर और मेरी सहयोगी डॉ. शेख रजिया जी ने शोध कार्य के लिए बड़ा सहयोग दिया आपके प्रति भी तह दिल से आभारी हूँ । इंग्रजी विभागाध्यक्षा डॉ.करुणा देशमुख जी ने भी कुछ शोध सामग्री देकर सहयोग दिया। डॉ. कदम मॅडम, डॉ. पाटील मॅडम, ग्रंथपाल अवचार मॅडम, मगर मॅडम आदि के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ ।

मझधार में डूबी नाव को किनारे पर ले आनेवाले एवं पल-पल मेरा हौसला बुलंद करनेवाले मेरे श्रद्धेय वासुदेव खंदारे गुरुजी के चरणों में सादर प्रणाम । सौ. सुमन खंदारे, दादा-जगदीश और भाभी वर्षा, समाधान भैय्या, प्रा. विवेक मिरगणे, दीपा काटे आप सभी के प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

मेरी स्व. माताजी कालिंदा कावले, स्व. पिताजी बलभीम कावले तथा स्व. फूफी चन्द्रभागा कावले जिन्होंने मुझे स्वतंत्र रूप से साहित्य के क्षेत्र में प्रगति करने का मौका दिया । कठोर मेहनत से मुझे चलना सिखाया । जन्म-जन्मांतर से इनके ऋण में रहकर उनके चरणों में मेरा यह अधखिला पुष्प अर्पित करती हूँ ।

मेरी साहित्य की विशाल दुनिया में प्रवेश करने के लिए हर-पल साथ देनेवाले मेरे छोटे भाई दिनेश कावले, गोरख कावले, और भौजाई ही नही, तो मेरी सखी वैशाली कावले का भी स्मरण करती हूँ। अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए मुझे प्रेरित करनेवाले मेरे जीजा और बहनें संगीता संतोष तपसे, अनिता सुधाकर धपाटे, कविता विनोद कदम इन सबको याद किये बिना मेरा यह प्रबंध अधूरा रहेगा ।

मेरे सपनों को पूरा करनेवाले, हर पल मेरा हाथ पकड़कर साथ देनेवाले, जन्म-जन्मान्तर के जीवन साथी चाळक प्रकाश जी के प्रति आभार प्रकट करने के बजाए अपने हृदय के कोने में सहेजकर रखना ज्यादा बेहतर समझती हूँ । मेरी सफलता से उन्हें जो संतोष होगा उसकी परिकल्पना करना कठिन है। मेरी सासू माँ मुक्ताबाई चाळक के प्रति

आभार व्यक्त करती हूँ । मेरे नटखट लाल सूरज की बाल-लीलाओं और शरारतों को कैसे भूल सकती हूँ । मेरी ननद संगीता सुग्रीव लोकरे और ललिता हनुमंत नखाते इन सभी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

मेरी सखियाँ डॉ. मीरा, डॉ. गंगा, सविता, डॉ. लोपामुद्रा, डॉ. अश्विनी, प्रा. सविता, डॉ. शिवाक्षमाला, सुनीता, वैशाली, आशा इन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना औपचारिकता मात्र होगी । डॉ. गाडे सर, डॉ. सिरसाट सर, डॉ. तोंडे सर, प्रा. हिंगमीरे सर, इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। साथ ही हिंगमिरे परिवार और परसवाळे परिवार का सहयोग प्राप्त हुआ अत: उनके प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ।

डॉ.बा.आं.म.विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के ग्रंथपाल और सभी कर्मचारियों के प्रति ऋण व्यक्त करती हूँ । मेरे महाविद्यालय के ग्रंथालय के सभी कमचारियों के प्रति तह दिल से ऋणी हूँ ।

साथ ही इस शोध प्रबंध का टंकलेखन करनेवाले यजुवेन्द्र वनकर तथा पप्पु इंगले आदि के सहयोग से यह शोध प्रबंध पूर्ण हुआ अत: इनके भी प्रति आभार व्यक्त करती हूँ ।

रेविता बलभीम कावळे